http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2023) वर्ष 3, अंक 7, 14-16

Article ID: 291

फसल का पोषण: कृषि में महिलाओं की परिवर्तनकारी भूमिका

पूजा[1], सिंटू मलिक[2] और नेहा शर्मा[3]

[1]शोध सहयोगी, अनुसंधान एवं विकास सेल, श्री बालाजी विश्वविद्यालय, पुणे, एमएच, (411 033), भारत

[2]रिसर्च करनेवाला वरिष्ठ व्यक्ति, कृषि विज्ञान केंद्र, भिवानी, सीसीएसएचएयू, हिसार, हरियाणा (127 021), भारत

[3]डी.ई.एस. बागवानी, बागवानी विभाग, सीसीएसएचएयू, हिसार, हरियाणा (127 021), भारत

कृषि, समाजों और अर्थव्यवस्थाओं की आधारशिला, विविध व्यक्तियों के सामूहिक प्रयासों पर पनपती है। इस जटिल परिस्थितियो के बीच, महिलाएं गुमनाम नायकों के रूप में उभरी हैं, जिन्होंने अपने उल्लेखनीय योगदान के माध्यम से कृषि परिदृश्य को आकार दिया है। फसलों के पोषण और पशुधन की देखभाल से लेकर अग्रणी नवाचारों और कृषि व्यवसायों के प्रबंधन तक, महिलाओं ने इस महत्वपूर्ण क्षेत्र के हर पहलू में लचीलापन, कौशल और दूरदर्शिता का प्रदर्शन किया है। यह लेख कृषि में महिलाओं की परिवर्तनकारी भूमिका पर गहराई से प्रकाश डालता है, उनके बहुमुखी योगदान, चुनौतियों का वे बहादुरी से सामना करती हैं, और अधिक न्यायसंगत और टिकाऊ भविष्य के लिए उन्हें सशक्त बनाने के लिए आवश्यक कार्रवाई योग्य कदमों की खोज करती है।

ऐतिहासिक संदर्भ और प्रगति

पूरे इतिहास में, महिलाओं ने कृषि में एक अमिट भूमिका निभाई है, अक्सर पर्दे के पीछे से आजीविका की रीढ के रूप में काम करती हैं। कई संस्कृतियों में, महिलाएं बीजों की प्राथमिक प्रबंधक थीं, जो पीढियों से जैव विविधता का पोषण कर रही थीं। हालाँकि, उनके योगदान को अक्सर मान्यता की छाया में धकेल दिया गया। महिला आंदोलनों के बढने और लैंगिक समानता की वकालत के साथ, उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को उचित रूप से स्वीकार किया जा रहा है। इस मान्यता ने प्रगति को गति दी है, जिससे शिक्षा, नेतृत्व भूमिका और कृषि मूल्य श्रृंखलाओं में भागीदारी के अवसर बढे हैं।

कृषि और महिलाओं के बारे में तथ्य

समग्र अनुमान के अनुसार, वैश्विक स्तर पर और विकासशील देशों में, महिलाएं कृषि श्रम शक्ति का लगभग 43 प्रतिशत हिस्सा बनाती हैं।

फसल, उत्पादन चक्र, आयु और जातीय समूह सभी प्रभावित करते हैं कि महिलाएं कृषि में कितना समय बिताती हैं। औसतन, निराई और कटाई मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा की जाती थी। सामान्य तौर पर, ग्रामीण महिलाओं पर शहरी पुरुषों की तुलना में अधिक श्रम भार होता है, जिसमें भोजन तैयार करने, ईंधन संग्रह और जल संग्रह से जुड़े अवैतनिक घरेलू कर्तव्यों का प्रतिशत अधिक होता है। ग्रामीण भारत में लगभग 84 प्रतिशत महिलाएँ अपनी दैनिक आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर हैं। किसानों और खेतिहर मजदूरों के मामले में, महिलाएं क्रमशः 33 प्रतिशत और 47 प्रतिशत हैं। ये डेटा देश के मवेशी, मत्स्य पालन और अन्य सहायक खाद्य उत्पादन क्षेत्रों में काम को ध्यान में नहीं रखते हैं। लगभग 47 प्रतिशत महिलाएँ चाय बागानों में काम करती हैं, 46.84 प्रतिशत कपास उगाती हैं, 45. 43 प्रतिशत तिलहन उगाती हैं, और 39.13 प्रतिशत कृषि क्षेत्र में सब्जियाँ पैदा करती हैं। हालाँकि ये फसलें बहुत अधिक श्रम की मांग करती हैं, फिर भी यह काम काफी अकुशल माना जाता है। इसके अलावा, सहायक कृषि कार्यों में भी महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। खाद्य और कृषि संगठन के अनुसार, सभी मछली किसानों और मछुआरों में भारतीय

महिलाओं की संख्या क्रमशः 21 प्रतिशत और 24 प्रतिशत है। भारत में महिलाओं को अभी भी मजदूरी, भूमि तक पहुंच और स्थानीय किसान संगठनों में भागीदारी के मामले में महत्वपूर्ण नुकसान है, भले ही वे कार्यबल का बहुमत बनाती हैं। इसके अतिरिक्त, उनके सशक्तिकरण की कमी के कारण अक्सर प्रतिकूल बाहरी प्रभाव पड़ते हैं, जैसे कि खराब पारिवारिक स्वास्थ्य और उनके बच्चों के लिए कम शैक्षिक उपलब्धि।

कृषि में महिलाओं का योगदान

1. कृषि श्रम और प्रबंधन : महिलाएं सक्रिय रूप से श्रम–गहन कार्यों में संलग्न होती हैं जो कृषि की सफलता को रेखांकित करती हैं। रोपण और निराई से लेकर कटाई और जानवरों की देखभाल तक, वे खेती की धुरी हैं। खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) के अनुसार, कुछ विकासशील देशों में खाद्य उत्पादन में महिलाएं 80ः तक योगदान करती हैं।

2. खाद्य सुरक्षा और पोषण : महिलाएं घरेलू खाद्य सुरक्षा की गुमनाम नायक हैं। उत्पादन में उनकी भूमिका से परे, वे अक्सर फसल के बाद की देखभाल, प्रसंस्करण और यह सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार होते हैं कि पोषण परिवार के प्रत्येक सदस्य की थाली तक पहुंचे।

3. कृषि व्यवसाय और उद्यमिता : कृषि व्यवसाय के बढ़ने के साथ, महिलाएं प्रमुख उद्यमी बन रही हैं। कारीगर सूखे फूलों के व्यवसाय से लेकर जैविक उत्पाद श्रृंखला तक, महिलाएं कच्चे कृषि उत्पादों में मूल्य जोड़ रही हैं, विशिष्ट बाजार बना रही हैं और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत कर रही हैं।

4. नवाचार और अनुसंधान : कृषि अनुसंधान और नवाचार का क्षेत्र महिला वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं द्वारा संचालित किया जा रहा है। वे सूखा–प्रतिरोधी फसलें, जलवायु–स्मार्ट तकनीक और वैश्विक खाद्य सुरक्षा को मजबूत करने वाली टिकाऊ कृषि पद्धतियों को विकसित करने में अग्रणी हैं।

5. सामुदायिक निर्माण : महिलाओं की भूमिकाएँ खेतों और बाजारों से आगे तक फैली हुई हैंय वे सामुदायिक बंधनों को बढ़ावा देते हैं। सहकारी समितियों, स्वयं सहायता समूहों और नेटवर्क के माध्यम से, वे ग्रामीण विकास को बढ़ाते हैं और अपने समुदायों को सशक्त बनाते हैं।

कृषि में महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियाँ

1. लैंगिक असमानता : कई क्षेत्रों में लैंगिक असमानता बनी

हुई है, जिससे भूमि, ऋण और प्रौद्योगिकी जैसे संसाधनों तक महिलाओं की पहुंच सीमित हो गई है। विश्व बैंक के अनुसार, दुनिया भर में केवल 15: कृषि भूमिधारक महिलाएँ हैं।

2. श्रम असमानताएँ : उनके महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद, महिलाओं को अक्सर कम वेतन और कौशल विकास के कम अवसर मिलते हैं, जो उनके आर्थिक सशक्तिकरण में बाधा डालता है।

3. मान्यता का अभाव : पारंपरिक लिंग मानदंड और पूर्वाग्रह कभी–कभी महिलाओं की उपलब्धियों पर हावी हो जाते हैं, जिससे उनके योगदान को वह मान्यता प्राप्त करने में बाधा आती है जिसके वे हकदार हैं।

4. शिक्षा और प्रशिक्षण : शिक्षा और प्रशिक्षण के अवसरों तक सीमित पहुंच महिलाओं की आधुनिक प्रौद्योगिकियों और नवीन प्रथाओं को अपनाने की क्षमता को प्रतिबंधित करती है।

परिवर्तन को सशक्त बनाना

1. नीतिगत हस्तक्षेप : दुनिया भर में सरकारें और संगठन कृषि में लैंगिक समानता के महत्व को पहचान रहे हैं। संसाधनों, भूमि स्वामित्व और वित्तीय सेवाओं तक समान पहुंच को बढ़ावा देने वाली नीतियां खेल के मैदान को समतल करने की दिशा में आवश्यक कदम हैं।

2. शिक्षा और प्रशिक्षण : कृषि में महिलाओं के लिए शिक्षा और कौशल विकास में निवेश अनिवार्य है। यह उन्हें ज्ञान से सुसज्जित करता है और उन्हें आधुनिक तकनीकों को अपनाने के लिए सशक्त बनाता है।

3. वित्तीय समावेशन : वित्तीय पहुंच में लिंग अंतर को पाटने से महिलाओं को अपने खेतों और कृषि व्यवसाय उद्यमों में निवेश करने के लिए सशक्त बनाया जा सकता है।

4. नेतृत्व के अवसर : निर्णय लेने की प्रक्रियाओं और नेतृत्व भूमिकाओं में महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करने से उनकी आवाज बुलंद होती है, समावेशी नीतियों को बढ़ावा मिलता है।

निष्कर्ष

कृषि में महिलाओं की गहन भूमिका संस्कृतियों, पीढ़ियों और परिदृश्यों तक फैली हुई है। उनके योगदान में लचीलापन, नवाचार और करुणा, समुदायों का पोषण और अर्थव्यवस्थाओं को बनाए रखना शामिल है। महिलाओं की स्थिति सभी सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक संकेतों में निम्न है। महिलाओं के मजदूरी कार्य को पुरुष अहंकार के लिए खतरा माना जाता है और महिलाओं द्वारा कई घरेलू आर्थिक गतिविधियों में शामिल होने से उनके काम के लिए पारिश्रमिक कम हो जाता है। कृषि में महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों को पहचानना और उनका समाधान करना न केवल समानता का मामला है, बल्कि इस क्षेत्र की वास्तविक क्षमता को उजागर करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। व्यक्तिगत जीवन से परे कृषि क्षेत्र में महिलाओं को सशक्त बनानाय यह समुदायों, अर्थव्यवस्थाओं और वैश्विक खाद्य प्रणाली का उत्थान करता है। जैसे–जैसे हम आगे बढ़ रहे हैं, आइए हम एक ऐसा माहौल बनाना जारी रखें जहां महिलाओं के नेतृत्व और योगदान का न केवल जश्न मनाया जाए बल्कि उनका समर्थन किया जाए, जिससे सभी के लिए अधिक न्यायसंगत और समृद्ध भविष्य सुनिश्चित हो सके।